सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जुलाई-अगस्त 2020

सच्चा प्रकाश

“हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अन्धकार को प्रकाश और प्रकाश को अन्धकार ठहराते, जो कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा मानते हैं!” (यशायाह 5:20)

इस दुनिया में ऐसा कुछ होता रहता है। लोग बुराई को अच्छा और अच्छे को बुरा कहते हैं। ऐसे लोगों के साथ हम क्या कर सकते हैं? जब आदम ने पाप किया, तो उसका दिमाग विकृत हो गया। जब यीशु आये तो वो सच्चा प्रकाश लाए। “अपनी ज्योति और अपना सच्चाई को भेज-वे मेरी अगुवाई करें; वे ही मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर, तेरे निवासस्थान पर पहुंचाएं।” (भजन संहिता 43:3) हमारे घरों में, अगर हमारे पास यह प्रकाश है और यह सच्चाई है, तो वे छोटे स्वर्ग होंगे। यहां तक कि हमारे चर्च भी ऐसे होंगे। लेकिन हमारी कुछ कलीसियाँओं में प्रकाश नहीं है और वहां सत्य नहीं दिया जाता है। चर्च

.....सच्चा प्रकाश.. पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

यदि तुम में से दो एकमत हों

“यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों।...” (मत्ती 18:19)

हम समर्थन कैसे प्राप्त कर सकते हैं, हर प्रकार के लोगों का सोच विचार यह है कि वे अपने काम के समर्थन के लिए एक बड़ी भीड़ को जमा कर लें। लेकिन उनकी बातें सुननेवाला कोई होगा या नहीं, उनकी बातों से कोई प्रभावित होगा या नहीं। जनता के ध्यान को खींचने के लिए या सरकार की योजनाओं और योजनाओं की रूप रेखा को लेकर अपना समर्थन प्राप्त करने के लिये एक बडी भीड़ इकट्ठी कर लें या नारे लगाकर प्रदर्शन करें, यही लोगों की समझ है।

कारखानो में हर काल्पनिक कारणों के लिये लोगों का मूल्यवान समय हड़ताल में बरबाद हो जाता है। उत्तेजित मजदूरों की भीड़ जमा होती है और दिन भर नारे लगाती है या कारखाने के गेट के सामने घूमती रहती है। इन हड़ताल करने वालों की शक्ति उनकी भीड़ की गिनती के उपर निर्भर करती है। राजनेता भी इसी सिद्धान्त को मानते है। यदि आप उनके साथ की भीड़ को अलग कर दीजिए, तब ये डरपोक और मूढ़ दिखेंगे।

सारी सफलता इस गिनती पर निर्भर करती है, यह गिनती, गिनती और गिनती है। हमारे दिमाग में यह भर दिया गया है कि गिनती ही सबकुछ है। परन्तु यीशु मसीह कहते है। “यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिये एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिये पूरी हो जायेगी।” (मत्ती 18:19) ‘यदि आप में से दो एकमत हों।’ किसी भी चीज को पाने के लिये यह बहुत सहज है। लेकिन दो ऐसे लोगों का मिलना, जो स्वार्थरहित हों, किसी योजनाओं के लिये एकमत हो सकेंगे यह सचमुच में कठिन है।

दो व्यवसायियों को एक साथ पूछें ; “देखिये, इस शहर में अनेक टूटे परिवार हैं। इन घरों के बच्चों उपेक्षित और प्रेम विहिन है। आगे जाने पर वे समाज के लिये खतरा बन सकते है। इसलिये हम कुछ रास्ता निकालें जिससे उनको प्रेम और देखभाल मिल सके। शायद आप उनके लिये एक खास (विशेष) घर बनवा सकते हैं और कुछ पैसों को उनकी देखभाल के लिए अलग रख सकते हैं।” दोनो इस बात के लिये सहमत हो सकते हैं कि यह काम अच्छा और बड़ा ज़रूरी है। किन्तु उनमें से एक या दूसरा इस काम को आगे न बढ़ा पाने के असंख्य बहाने ढूंढेगा। एक अपनी बारी आने पर कहेगा , “पहले मुझे अपनी किस्मत आजमाने दें” और दूसरा अपने व्यवसाय की उन्नति पर ध्यान देगा। “उन्नति मिलने पर इस काम में हाथ डालेगें।” “यह एक अच्छा विचार है और यह बहुत आवश्यऔक बात है।” वे

सहमत हैं, दोनो जनों के पास पैसा है, लेकिन सरलता से सहमत नही होंगे कि कब, कहां और कैसे उस काम को शुरु किया जाये। बहुत सी योजनाओं के लिये समिति में विचार विमर्श किया जाता है और उस बात का अंत वहीं हो जाता है। दो व्यक्ति सहमत नहीं हो पाते हैं। दो स्त्रियां बहुत ही मुश्किरल से सहमत होंगी। दो बहनों का व्यक्तिगत दृष्टिकोण विपरीत होता है। दो नेता हैं परन्तु वे बिलकुल अलग तरीके का इस्तेमाल करते है। सो हमारे बीच कोलाहल मचा रहता है। एक कुछ चिल्लाता है और दूसरा उससे उल्टी बातें कहता है।

परन्तु जब एक व्यक्ति अपने पापों से पश्चा ताप करता है और यीशु मसीह मे एक नया जीवन पाता है, उसके अन्दर अपने पड़ोसियों की भलाई के लिये बड़ी चाहत उत्पन्न होती है। यह कोई उद्देश्यतहीन और पैसों का बिखेरना नही होता है। मैं उनकी बात कर रहा हूँ ,जो मजबूत, स्थिर और परोपकारी इच्छायों रखते है कि लोगों के लिये आत्मत्याग करें, सेवा करें और दूसरों को बचायें। इसलिये दो नौजवानों के लिये जो यीशु मसीह कि शक्ति द्वारा बदल गये हैं। वे अपने ह्रदय और दिमाग को एक करते है। कुछ बड़े आन्दोलनों का आरंभ करते हैं जिससे हजारों का जीवन बदल जाये, यह कठिन नहीं है।

सही परिवर्तन का मतलब है, अपने आप का यानि - स्वार्थ का त्याग और यीशु मसीह के निकट आना। जब स्वार्थ या आपकी "मैं", आप में बनी रहती है तो आप नहीं कह सकते कि आप सचमुच में परिवर्तित है। जब एक व्यक्ति यीशु मसीह के पास आता है, पहले वह व्यक्ति अपनी इच्छा, अपने सोच-विचार, अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लगा रहता था, पर अब उसका पूरा व्यक्तित्व अपनी स्वार्थी इच्छा को करने से रोक देता है। और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना शुरु कर देता है। अपनी स्वार्थी इच्छा को छोड़कर परमेश्वर की इच्छा पूरी करना ही सच्चा परिवर्तन होगा।

इस तरह का आदमी परमेश्वर को महिमा देना चाहता है, और आत्मत्याग करने वाला जीवन जीता है। अपने उध्दारकर्ता को प्रसन्न करने में ही उसकी सबसे बड़ी खुशी है। अब दो परिवर्तित व्यक्तियों का एक साथ प्रार्थना करना और एक जैसे सोचना, यह कोई अचम्भे की बात नही है। उनके बीच परमेश्वर का वचन है जो उन्हें एकमत करता है। इस तरह दो व्यक्ति जब एक साथ, एक मन और एक विचार से प्रार्थना करते हैं। उनसे महान सामर्थ पैदा होता है। आश्चर्यकर्म होते हैं। परमेश्वर उनके बीच रहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि कलीसिया वह हैं जहां पर पवित्रात्मा काम करता है।

जब हम यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं। तब हमारे लिये यह बहुत मुश्किनल होता है कि अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए छोटी-छोटी चीजों को परमेश्वर से मांगे। यीशु मसीह हमें महान चीजों के लिये प्रार्थना करना सिखाते हैं जो परमेश्वर के राज्य को बनाती है।

"यदि पृथ्वी पर दो जन एकमत होकर किसी भी चीज के लिये मांगे वह हो जायेगा।" परमेश्वर मुश्किेल से ही अपने बच्चों की प्रार्थना का इंकार करते है। केवल तभी जब वे देखते हैं कि यह उनके बच्चों के लिये नुकसानदेह है। परमेश्वर ऐसे किसी भी निवेदन को रोक कर नही रखते जो कि एकमत ह्रदयों से आया हो।

मैं बहुत नौजवान दम्पत्तियों से मिला हूं, जिनका विवाह कई सालों पहले हुआ है, परन्तु वे एक साथ प्रार्थना नहीं करते हैं। वे एक साथ रहते हुए भी एक साथ प्रार्थना नहीं करते हैं। आप अपने विवाह को पशुओं के स्तर तक गिरा सकते हैं। परन्तु निश्चपय जानिये कि एक साथ प्रार्थना करने की अवहेलना का परिणाम भयंकर होगा।

बालकपन से ही मैं अपने माता-पिता को हर रोज़ एक साथ प्रार्थना करते हुए देखा। उनकी प्रार्थना का परिणाम था कि हमारा घर एक सुन्दर स्थान था जहाँ एकता की भरपूरी और शान्ति भरी थी। उस वातावरण में स्वास्थ्य था और शायद ही कोई दर्दनाक बिमारी थी। बच्चे होने के नाते हमने बड़ी सुरक्षा का आनंद उठाया। डर के लिए हमारे घर में कोई जगह नहीं थी। हम जानते थे कि जब हमारे पिता ने प्रार्थना की, परमेश्वर द्वारा अद्भुत काम हुआ। इसलिये हमें कोई भी समस्या अनुचित ढंग से परेशान नहीं करती थी। एक तरफ माँ बहुत सरल थी, साथ ही दृढ़ भी। उन्होंने हमें अडिग आज्ञाकारिता की सीख दीं।

मेरे माता-पिता ने एक अद्भभुत टीम बनाई। हम बच्चो ने कभी भी उन्हें पैसों के लिये लड़ते या बहस करते हुए नहीं देखा। परन्तु प्रायः हमने उनकी प्रार्थना करने की आवाज सुनी। हमें यह देखने के

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

बहुत से मौके मिले कि शुध्द हृदय से निकली प्रार्थना कितनी प्रभावशाली होती है।

हमारे घर में बहुत लम्बे अरसे से एक सुसंस्कृत वृध्द महिला रहती थीं। पहले वे सरकार में एक अच्छे उंचे पद पर थीं। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि वे परमेश्वर के बच्चों के साथ सहभागिता रखें, सो मेरे पिता ने उन्हें हमारे यहाँ रखा।

एक दिन वे बीमार पड़ीं। उनके पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा था। उनकी छोटी आंत में कुछ गड़बड़ थी। परन्तु डाक्टथर उनका आप्रेशन नहीं करना चाहते थे। क्यों कि वे बहुत बुजुर्ग और कमजोर थीं। उनकी उम्र अस्सी साल से ज्यादा थी। उनका दर्द असहनीय था। हम बच्चों ने कभी भी अपने माता-पिता की प्रार्थना को असफल होते हुए नहीं देखा था। हम उनकी बिगड़ती दशा को देख चिन्तित थे। जो भी करना था बहुत जल्द करने की ज़रूरत थी।

उस रोज़ तकरीबन सारी रात माता-पिता ने प्रार्थना में बितायी। और परमेश्वर ने कहा "जिनके लिये तुम पृथ्वी पर एकमत हो कर प्रार्थना करो, वह हो जायेगा।" परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी। प्रातःकाल वृध्दा की तकलीफ कम हो गयी। वे चंगी हो गई। और इसके बाद उन्हें इस प्रकार की तकलीफ कभी भी नहीं हुई।

हमारी प्रार्थना में, उद्देश्य की पहली जगह है। यदि आप इस कारण प्रार्थना का पूरा उत्तर चाहते हैं क्यों कि उत्तर पाने से अपनी समृध्दि और आराम मे बढ़ौतरी होगी। परमेश्वर किसी भी तरह अनुग्रह कर आपकी सुने। परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुने, ऐसा इसलिए नहीं कहना चाहिए क्योंककि इससे आपकी बड़ाई होती है। और अपने परिचितों के बीच आपकी प्रसिध्दि एक भक्त की तरह होती है। आपका मांगना स्वार्थ से वशीभूत नही होना चाहिए।

आप क्यों चाहते हैं कि आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे? क्या आप खड़े हो कर परमेश्वर को महिमा देंगें और उनके सच्चे चेले बनेंगे? आप उन्नति क्यों माँगते हैं? क्या उस ऊंची पदवी पर जाकर, और भी अधिक शक्तिशाली प्रभाव द्वारा यीशु को तथा उनकी धार्मिकता को बनाए रखना चाहते हैं? ऐसा होने पर आपके ऑफिस से सारी घूसखोरी और अनैतिकता बन्द हो जायेगी। यदि ऐसा है, तो परमेश्वर आपकी इच्छापूर्ण करें। जब ऐसे व्यक्तियों को प्रभु बदल देते हैं, धार्मिक व्यक्ति - जब वह अधिक दायित्व ग्रहण करने की स्थिति में होता है तो मै हमेशा आनन्द मनाता हूं।

आप एक नया हृदय पाइये और उनके साथ मिलकर प्रार्थना करें जो प्रभु को शुध्द हृदय से पुकारते हैं।

- जोशुआ दानियेल।

.... सच्चा प्रकाश.. पृष्ठ 1 से

पैसे इकट्ठा करने और कुछ समारोहों का निर्वहण करने के लिए संगठन मात्र बन गए हैं। मसीह में शक्ति क्या है? क्या वह मुख्य रूप से चंगा करना है? नहीं। वह मुख्य रूप से दिल को रोशन करना है और परमेश्वर के प्रकाश में, मनुष्य को अपनी पापपूर्णता को देखना है।

यूलिसिस और सिरके के बारे में एक कहानी बताई जाती है। सिरके एक जादूगरनी थी जो एक द्वीप में रहती थी। वह अपने मेहमानों को खाना खिलाती थी और अपने करतबों का इस्तेमाल करके उन्हें पक्षियों या जानवरों में बदल देती थी। उनका स्वभाव उन प्राणियों के जैसे बदल देती थी। शैतान ने हमारे साथ भी ऐसा ही किया है। हम सम्मानजनक दिखते हैं, लेकिन हम बुराई को अच्छा और अच्छाई को बुरा कहते हैं। हमने अपने बच्चों को भी यही पढ़ाया है। "इसलिए मैं कहता हूं, और प्रभु में तुम्हें चेतावनी देता हूं कि जिस प्रकार ग़ैरयहूदी अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम आगे को वैसे न चलो।" (इफिसियों 4:17)।

आपके मन के घमंड से, आपको मुक्ति कौन दिला सकता है? यीशु के अलावा ऐसा कोई नहीं कर सकता। कोई भी ऐसा नहीं है जो परमेश्वर के सामने, आपकी जगह ले सकता है, केवल यीशु। यीशु, जो एक बेदाग जीवन जीये थे, एक निगूढ़ तरीके से हमारे पापों को खुद पर ले लिया। कौन आपको अपने विकृत मन से बचा सकता है - जो अच्छाई को बुरा और बुराई को अच्छा कहते हैं? यीशु के द्वारा सच्ची रोशनी चमक गई है। और स्वर्ग के मानक आपके दिल में आ जाएंगे और आप दुनिया को अलग तरह से देखेंगे। आइए हम यीशु मसीह के लिए परमेश्वर का शुक्रिया अदा करें।

- एन डैनियल

अपने लिए चुनें!

"फिर स्वर्ग का राज्य सच्चे मोतियों को खोजने वाले एक व्यापारी के समान है। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस मोती को खरीद लिया।"— यीशु मसीह (मत्ती 13:45-46).

हम में से प्रत्येक एक संग्रह करनेवाला है। कुछ सिक्के, स्टैम्प, बेसबॉल कार्ड, पेंटिंग इकट्ठा करते हैं और इसकी सूची जारी रहती है। यदि आप अपने आप को जाँचे तो आप पाएंगे कि आप "खजाने" का संग्रह करनेवाले जन हैं। बाइबल कहती है कि जहाँ आपका खजाना है वहाँ आपका दिल बसा है। क्या आप अपना समय और पैसा बर्बाद

कर रहे हैं जब मौत के बाद, एक भी चीज़ आपके साथ नहीं जा सकती है? आपको केवल एक चीज पाने की ज़रूरत है जो अब आपके पास रह सकती है और जब आप मर जाते हैं तो अपने साथ ले जा सकते हैं, वो है - अनन्त जीवन।

अनन्त जीवन परमेश्वर की ओर से मुफ्त उपहार के रूप में पाना संभव है जिसे आप चुन सकते हैं।

समाज सेवा और अच्छाई करके आप इस शाश्वत जीवन को नहीं खरीद सकते। आप एक रस्सी डाल कर स्वर्ग में नहीं चढ़ सकते हैं – वो नीचे गिर जाएगी। जब आप अपनी लाचारी और निराशा कबूल करते हो और अपने दिल से यीशु को पुकारते हो, तो वह आपकी बात सुनेंगे और आपकी मदद करेंगे।

जब आप जानते हैं कि आप अपना पैसा भी खोने जा रहे हैं, तो आपको यीशु के ज़रीये से ईश्वर की दया और क्षमा के लिए पुकारने में आपका क्या खो जाओगे? पाने के लिए आपके पास केवल अनन्त जीवन है!

आगे बढ़ें! अपने लिए चुनें।

-चुनी हुई।

जब वह आया

"और जब वह [पवित्र आत्मा] आएगा, तो संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।" - यीशु मसीह (यूहन्ना 16:8)

1859 में, वेल्स में एक आत्मिक संजीवन आया था - जब परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने एक सोते हुए चर्च को, आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए जगा दिया था। जब 1858 में, अमेरिका में आई एक पुनरुद्धार की खबर वेल्स पहुंचीं, तो परमेश्वर का आत्मा उन पर उंडेलने, यह आशा करते हुए विभिन्न कलीसियाँयें प्रार्थना करने के लिए तैयार थे; वेल्स में पहले से ही बेदारी हुई थी, और वहाँ के कुछ लोग फिर एक बार बेदारी को अनुभव करना चाहते थे।

बेदारी के परिणामस्वरूप, अधिक उत्कट प्रार्थना, अधिक शक्तिशाली उपदेश, अधर्मी को परिवर्तित करना के लिए अधिक जोशीले उत्साह, और अधिक प्रामुख्य रूप से ईश्वरवाद पाया गया था। वह पुनरुद्धार सर्दियों के बाद आया आध्यात्मिक वसंत की तरह था - परमेश्वर की अच्छी खुशी की धूप और पवित्र आत्मा की ताज़ा वर्षा इसके कारण थे। परमेश्वर ने ऐसे लोगों को बचाया जो पहले सबसे अधिक अपवित्र और लापरवाही का जीवन जी रहे थे। यहाँ जे.जे. मॉर्गन द्वारा दिया गया एक उदाहरण है, जिन्होंने संजीवन के बारे में लिखा है।

एक शाम की सभा में, एक मोटे और बुलंद किसान, अजीब तरह से प्रभावित हुआ था। सुबह वह अपने आप में आई एक रहस्यमय और क्रांतिकारी परिवर्तन की चेतना से घबरा गया। वह गालियाँ नहीं दे पा रहा था। उन्होंने शिमशोन की तरह खुद से कहा, "मैं पहले की तरह ही बाहर जाऊंगा और खुद को हिलाऊंगा"। लेकिन उसमें से बुराई की ताकत चली गई थी। वह दूसरों की तरह ही कमजोर था।

अपने-अपने काम कर रहे उसके अपने नौकरों की तलाश की। जिससे, उन्होंने कल्पना की कि अब उन्हें अपनी गाली देने की आदत आज़माने के लिए काफी कारण मिलेंगे। लेकिन वह गाली देने के लिए एक भी शब्द नहीं बोल पाये। तब उसे एहसास हुआ कि उसकी 'बीमारी' (गाली देने की असक्षमता) का हल करने के लिए एक कठोर उपाय की ज़रूरत थी। उस अंतिम उपाय के रूप में, उन्होंने सोचा कि अगर वह अपने आस-पड़ोसों के कुछ भेड़-बकरियों को अपनी चरागाह पर चराई करते हुए देख पाए, तो वह अपनी गाली देने की क्षमता को दुबारा पा सकता है।

इसलिए वह एक पहाड़ी पर चढ़ गया जो पास ही थी, लेकिन कुछ भी हासिल ना हुआ। उसका अंग-अंग कांपने लगा। "यह क्या है?" वह रोया। "मैं गाली नहीं दे सकता; क्या होगा अगर मैं ने प्रार्थना करने की कोशिश की?" वह भटकटैया-झाड़ियों के बीच प्रार्थना करने घुटनों पर गिर पड़ा। और इसके बाद जब तक वह जीवित रहा, सदा के लिए प्रार्थना करनेवाला का एक आदमी बना रहा।

- ऐफियन एवांस, जब वह आया है: 'द 1858-60 रिवैवल इन वेल्स' (इवगन्जलिकल प्रेस)

सत्य की परख!

"मैं तुम्हें शाँति दिए जाता हूँ, अपनी शाँति तुम्हें देता हूँ, ऐसे नहीं देता जैसे संसार तुम्हें देता है। तुम्हारा मन व्याकुल न हो, और न भयभीत हो।" (यूहन्ना 14:27)

अद्भुत उद्धारकर्ता

यशायाह ने कहा: "उसका नाम अद्भुत कहलाएगा ..."

एक अद्भुत उद्धारकर्ता, यीशु मेरा प्रभु है,
मेरे लिए एक उद्धारकर्ता अद्भुत;
उसने मेरी आत्मा को चट्टान के खंभे में छिपा दिया,
जहां मुझे खुशी की नदियां दिखती हैं।

यीशु एक अद्भुत उद्धारकर्ता है।

"मैं बचना चाहती हूं," एक जिले की नर्स ने लिखा- अपनी नाखुशी में हताश्त, उसने लंदन सिटी मिशन के ईसाइयों से बात करने के लिए, लगभग 100 मील की यात्रा की।

हाँलाकि वह एक ईसाई घर में पैदा हुई थी मगर कॉलेज के दिनों के

दौरान उसके दिमाग में संदेह पैदा हो गया था। आस्था और शांति गायब हो चुकी थी। नतीजा, दुःख ही था।

अन्य लोगों ने उसके बहाली अनुभव में मदद करने की कोशिश की थी, लेकिन वह परमेश्वर के वचन पर भरोसा नहीं कर पाई थी। जब पत्र आते हैं कि उसे कैसे बहाल किया जा सकता है, "मुझे भरोसा नहीं हो रहा है," वह वापस लिखती।

उसे लंदन सिटी मिशन मुख्यालय में आमंत्रित किया गया जहाँ एक मिशनरी और उनकी पत्नी ने उससे तीन घंटे तक बात की थी। वह नर्स अपनी आत्मा के बोझ को हल्का कर पाई थी।

शैतान के साथ, आध्यात्मिक संदेह और व्यक्तिगत कुश्ती के उस अंधेरे स्थान में, हमले के तहत जो आत्मा है, निराशा की गहराई का अनुभव करती है। ऐसी आत्मा नर्क के बीहड़ों को महसूस कर लेती है।

व्यक्तिगत विश्वास की समस्या वह पहली बाधा थी जिस पर उसे विजय पाना है। कुछ लोग बस विश्वास कर लेते हैं, लेकिन दूसरों के लिए विश्वास की लड़ाई में ज़मकर मुकाबला करना पड़ता है। कुछ लोगों के लिए, व्यक्तिगत समस्याओं, गुप्त पापों, आत्मसमर्पण करने की अनिच्छा और व्यक्तिगत अविश्वास के समस्याग्रस्त तथ्य, जैसे कारणों से सालों-साल कुश्ती लड़नी पड़ती है।

"विश्वास परमेश्वर का एक उपहार है," उस मिशनरी ने समझाया। "वह देता है। वह उसका पेशकश कर रहा है। उसे अभी ले लो, जैसे कि आप एक दोस्त से एक उपहार लेती हो।"

"लेकिन, मैं विश्वास नहीं देख सकती। तो फिर, मुझे कैसे पता चलेगा कि वह देता है, या वह मुझे विश्वास देने के लिए तैयार है?"

बाइबल कहती है: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2 :8,9)

"परमेश्वर देते है। परमेश्वर आपको विश्वास की पेशकश कर रहे है - विश्वास करने के लिए भी आत्मविश्वास।"

"लेकिन यह मानते हुए कि ईश्वर ने मुझे उनके चुने हुओं [जिन्हें, उन्होंने पहले से ही चुना है] के बीच में नहीं रखा है तो फिर?"

"आप परमेश्वर के चुने हुओं के बीच में हैं। यह आपका अधिकार है। 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया है – जिस जगत में आप और मैं शामिल हैं - मानव जाति का पूरा संसार। 'जो कोई मेरे पास आएगा, मैं निश्चय ही उसे न निकालूँगा।' आपको केवल आने की जरूरत है।"

अपने उद्धारकर्ता के सांत्वना के जंगल में, उसने कदम दर कदम संघर्ष करते, आध्यात्मिक सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़ी। वो कृतज्ञता से भर कर घुटनों पर गिर पड़ी; फिर वे सब मिलकर आनंद में उठ खड़े हुए।

जब हमने उसे अलविदा कहा, वो बोली, "अब मुझे पता है कि मैं बच गई हूँ,"।

एक ईसाई का दिल जिसने उसकी मदद की थी, वह गा रहा था:

सही निवेदन, सब है आराम,
मैं अपने उद्धारकर्ता में हूँ खुश और प्रसन्न;
देखना और इंतजार करना, ऊपर देखना,
उसकी अच्छाई से भरे, उसके प्यार में खो गया।

"क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को बचाने आया है।" (मत्ती 18:11) "खोया!" यह दुखद शब्द सबसे आम पद-नाम है जो यीशु ने उन लोगों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया था जो उनके राज्य के बाहर थे: "परमेश्वर के लिए और खुद के लिए खोये हुए लोग।" वह उन्हें खोजने और उन्हें बचाने के लिए दुनिया में आया है। यह उनका लक्ष्य था और अभी भी उनका जलता हुआ जुनून है। और अब भी यह यीशु का बोझ, जब तक कि आखिरकार "वह (परमेश्वर) उनकी मनोव्यथा को देखता है" और वह (परमेश्वर) पूरी तरह से संतुष्ट है। -एफ. एच. ब्रिन्टमोर, 'द न्यू लंदन' (लंदन सिटी मिशन)

प्रार्थना की शक्ति

अगस्त 1857 में, अमेरिका में व्यापार दुनिया में अचानक, भयभीत करने वाली उथल-पुथल हुई। इस आपदा के बाद जल्द ही ईसाई आत्मिक जागृतियों की खबरें और परमेश्वर की दिव्य कृपा की उल्लेखनीय बातें देखने में आयीं। वाणिज्यिक संकट को व्यापार के नियमों द्वारा आसानी से नहीं समझाया जा सका। इसे परमेश्वर की ओर आया एक दंड माना गया। बहुत से लोग दुनियादारी में इतने डूब गए थे कि वे आध्यात्मिक और शाश्वत से अनजान थे। परमेश्वर का न्याय, लोगों की लापरवाही, अपव्ययता और मूर्खता में गिरफ्तार करने के लिए माना गया। हजारों का व्यापार ठप्प हो गया और ऐसे समय में दूसरा कुछ न करने की स्थिति न होने के कारण, लोग प्रार्थना सभाओं में इकट्ठे हो गये, प्रार्थना सभाएं जो पहले से ही निर्धारित हो चुकी थीं और अब अधिक संख्या में होने के साथ ही स्वर्गीय परमेश्वर से जीवन का एक नया अभिषेक प्राप्त किया।

न्यूयॉर्क के फुल्टन स्ट्रीट के एक चर्च में, जेरेमिया केल्विन लैम्फियर ने फर्श पर घुटने टेके थे, गंभीर प्रार्थना में लगे हुए थे। वह लगभग बीस वर्षों से इस शहर में रहते थे और दूसरों के लिए भी बहुत जीवन बिताया, लगभग पूरी तरह से दूसरों के लिए। दुनिया में परमेश्वर और आशा के बिना बहुत से लोग अनंत मृत्यु के द्वार की ओर जा रहे थे। वह शहर के गरीब स्थानों में गए थे और लोगों के उद्धार के लिए कुछ करने की लालसा रखी। उनकी निरंतर प्रार्थना थी: "हे प्रभु, आप मुझे क्या करने को कहते हैं?" जितनी अधिक उन्होंने प्रार्थना की, उतनी ही उत्साहजनक उम्मीद से उत्सुक थे कि परमेश्वर उन्हें रास्ता दिखाएंगे जिसके माध्यम से सैकड़ों और

हजारों प्रभावित हो सकते हैं।

एक दिन बस्ती का चक्कर लगाते हुए, जैसे ही वह सड़कों पर चला, उनके दिमाग में यह विचार आया कि एक घंटे की प्रार्थना, बारह से एक बजे तक, व्यापारियों के लिए फायदेमंद होगी। विचार था कि गाने, प्रार्थना, उपदेश और धार्मिक अनुभव का संबंध हो; साथ ही ये रोक नहीं थी कि किसी को भी पूरे घंटे भर सभा में ठहरना ज़रूरी था; कि सभी अपनी इच्छा या रुचि या काम हिसाब से आ-जा सकें।

23 सितंबर 1857 को दोपहर बारह बजे, एक चर्च के कमरे का दरवाजा खोला गया, जहां लैम्फियर आधे घंटे तक अकेले बैठे रहे, तब किसी आनेवाले व्यक्ति के कदम की पदचाप को सीढ़ियों पर से सुना। कुल मिलाकर छः लोग इकट्ठे हुए और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए प्रभु उनके साथ थे। इस तरह दोपहर को व्यापारियों की प्रार्थना सभा शुरू हुई!

अगली प्रार्थना सभा जो कि एक हफ्ते बाद हुई बीस लोगों को प्रार्थना में बहुत एकता मिली, और उपस्थित लोगों के दिल उनके भीतर पिघल गए। 7 अक्टूबर को एक और प्रार्थना सभा हुई। लाम्फ़ियर जैसे ही लोगों से गली में मिले, उनसे बात की ताकि वह उनका ध्यान आकर्षित कर सके, और उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु अनेक लोगों को प्रार्थना की जगह पर आने के लिए प्रेरित करेंगे। इसलिए यह प्रार्थना सभा इतनी सजीव और उत्साहजनक थी कि अगले दिन 8 अक्टूबर को एक और प्रार्थना सभा निर्धारित की गई, और इस तरह एक दैनिक व्यापारियों की प्रार्थना सभा शुरू हुई। यहाँ गहरी विनम्रता और बड़ी इच्छा थी कि परमेश्वर उन पर अपने आत्मा को उंडेल दे। अगले दिन के विषय में, लाम्फियर ने लिखा: "यह स्वर्ग का बहुत बड़ा द्वार था।"

जल्द ही वहाँ एक सौ से अधिक लोग मौजूद थे, जिनमें से कई धर्म को नहीं मानते थे लेकिन उन्हें अपने पाप का एहसास होने लगा और मसीह में रुचि रखने लगे, पूछते थे कि उन्हें पापों की क्षमा पाने के लिए क्या करना है।

फुल्टन स्ट्रीट प्रार्थना-बैठक में रुचि बढ़ी और आत्मिक आग फैल गई। इसके अलावा, विभिन्न चर्चों ने सुबह की प्रार्थना सभाएँ आयोजित कीं। प्रार्थना का स्थान एक रमणीय स्थल था, और प्रार्थना के स्थानों को बढ़ा दिया गया क्योंकि लोग प्रार्थना के लिए प्रेरित थे। वे प्रार्थना करना चाहते थे। उन्होंने कुछ अनदेखी शक्ति से, प्रार्थना करने के लिए, दबाव महसूस किया। उन्होंने प्रार्थना के लिए बुलावे का दबाव महसूस किया। इसलिए एक बार प्रार्थना की जगह खोले जाने के बाद, ईसाई लोग अपनी विनती को उंडेल देने के लिए इकट्ठा हुए। मसीह के लिए प्यार था, उनके सभी लोगों के लिए प्यार, प्रार्थना का प्यार, व्यक्तिगत प्रयास का प्यार और आत्माओं के लिए प्यार था। मसीह का नाम बहुत सम्मानित हुआ, इस नाम का अक्सर ज़िक्र होने लगा और विश्वासी के लिए बहुत कीमती हो गया था। पूरा माहौल प्रेम से भरा था। जो लोग मसीह से प्यार करते थे, और जिसे भी देखते और जिस किसी में भी देखते थे, मनुष्यों में उनकी छवि से प्यार करते थे - और इसलिए वहां प्रार्थना में विभिन्न पृष्ठभूमि के ईसाइयों का एक संघ था।

प्रार्थना में ईसाइयों के इस संघ ने नास्तिक दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया। जिन लोगों ने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया, उन्हें लगा कि ईसाई उनसे प्यार करते हैं, आत्माओं के लिए उनके प्यार ने उन्हें तत्पर कर दिया। उनके लिए सच्चाई की प्रशंसा की गई, और उन्हें लगा कि यह परमेश्वर का काम है। प्रार्थना सभा पवित्र स्थल बन गई थी। उन्होंने देखा कि ईसाई कितने विनम्र थे। यह महसूस किया जाने लगा कि ईसाईयों को प्रार्थना के जवाब मिले हैं, कि यदि वे किसी एक व्यक्ति के उद्धार के लिए एकजुट होकर प्रार्थना करते, तो वह व्यक्ति जरूर पापों से मन फिरा लेता था। लोगों ने ऐसी प्रार्थना की जैसे कि वे उम्मीद करते कि परमेश्वर प्रार्थना सुनेंगे और जवाब देंगे। इसलिए यीशु मसीह के पास आने के लिए परमेश्वर ने पापसिद्धि और मन फिराने का मार्ग तैयार किया। उनके पवित्र-आत्मा ने सुसमाचार प्रचारकों को बाइबल के उन हिस्सों से प्रचार करने में अगुवाई की जो कठोर दिलों के टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

वही शक्ति जो फुल्टन स्ट्रीट में प्रार्थना करने के लिए काम कर रही थी, और जगह भी काम करने लगी, और इस तरह 1858 में अमेरिका में प्रार्थना की जागृति आई। लोग प्रार्थना की आत्मा से भर गये। उन्होंने प्रार्थना करने के लिए जगह की मांग की। उन्होंने प्रार्थना बोझ का साझा किया- जो खास आत्माओं के उद्धार के लिए थी। उन्हें प्रार्थना के जवाब मिले। वादे स्थिर थे: "माँगो, और यह तुम्हें दिया जाएगा" और परमेश्वर "न तो उंघते, न ही थके हुए थे"। "खेत" सनातन आत्माओं के "फसल के लिए पके" थे। वे परमेश्वर को पुकारना कैसे रोक सकते थे? प्रार्थना के उत्तर तेजी से नीचे आए, और बहुतेरे परमेश्वर की ओर मुड़ रहे थे और पूरे मन से उसकी तलाश कर रहे थे।

हर जगह सभाओं में लोगों की भीड़ लगी रहती थी। उत्तरी, मध्य, पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों को भी हिला दिया गया। सभी वर्गों ने प्रार्थना की। इस जागृति की सर्वशक्तिमान शक्ति के तहत सबसे निराशाजनक और निषिद्ध लोग लाये गये। समाज में उच्चतम से लेकर सबसे नीच और सबसे हीन, परमेश्वर की शक्ति और अनुग्रह की निशानियाँ बनाई गईं। बड़े ही दुष्ट और भ्रष्ट चरित्र के लोग खुद को यीशु मसीह के क्रूस के पैरों पर विनम्र करने लगे, जहां वह मनुष्य के पापों के लिए प्रायश्चित कर मर गया - आश्चर्यजनक, दिव्य दया के भारी प्रदर्शन। यह ऐसा था जैसे परमेश्वर कह रहे हों, "उनके पुकारने से पहले मैं जवाब दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूँगा""तू अपना मुंह पसार, मैं उसे भर दूंगा।" यह सभी दिलों पर लिखे हुए लग रहे थे: "हे मेरे मन यहोवा के सामने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है।" सबसे गहरा एहसास यह था कि "शक्ति परमेश्वर की है।" अपनी शक्ति में, उन्होंने एक संपूर्ण देश में प्रार्थना की जागृति उंडेल कर आशीर्वाद दिया।

सैमुअल प्राइम से लिया गया है, प्रार्थना की शक्तिः द न्यू यॉर्क रिवाइवल ऑफ 1858 (द बैनर ऑफ ट्रुथ ट्रस्ट, 1991)।